वस्तुतः पूर्ववर्ती अध्यायों के विश्लेषण के पश्चात यह तथ्य निकाल कर आता है कि शांति प्रयोगशाला जिस प्रकार से सकारात्मक शांति के लक्ष्य को लेकर अपने कार्यक्रमों का संचालन एवं क्रियान्वयन करती है, ठीक उसी प्रकार गांधी जी भी अपने आश्रम को प्रयोगशाला के तौर पर रचनात्मक कार्यप्रणालियों के आधार पर शांति (सकारात्मक शांति) हेतु प्रयोग करते थे। गांधी जी ने जो अठारह रचनात्मक कार्यक्रम बताये वर्तमान में उन सभी का व्यावहारिक तौर प्रयोग नहीं हो पता है, वर्तमान में सेवाग्राम आश्रम में भी उनमें से कुछ को ही संचालित किया जा रहा है। अतः इनका क्षेत्र सीमित एवं प्रभाव केवल वैकल्पिक तौर पर रह गया है, जैसे **नई तालीम**, **खादी**, **नशाबंदी**, **चिकित्सालय**, **कृषि**, **स्वदेशी** आदि का कुछ हद तक अस्तित्व है वो भी उसकी प्रकृति में कुछ मूल-भूत परिवर्तन के पश्चात, जिस प्रकार स्वच्छता के मुद्दे को वर्तमान समय में राष्ट्रीय स्तर पर लागू किया गया है। जिसका श्रेय हमारे देश के वर्तमान प्रधानमंत्री **श्री नरेंद्र मोदी** जी को जाता है। अतः उसका प्रभाव सम्पूर्ण राष्ट्र पर देखने को मिल रहा है। ठीक इसी प्रकार गांधी जी के अन्य रचनात्मक कार्यक्रमों को भी कुछ परिवर्तन के साथ लागू किया जाये तो निश्चित तौर पर उनका प्रभाव भी राष्ट्र हित में होगा। अतः अगर हम रचनात्मक कार्यक्रमों के आधार पर सेवाग्राम आश्रम को प्राकल्पनात्मक रूप से एक शांति प्रयोगशाला के रूप में स्थापित करना चाहें तो उसकी संरचना निम्निखित प्रकार से होगी –

सर्वप्रथम तो गांधी जी द्वारा बताए गये रचनात्मक कार्यक्रमों को क्रमबद्ध तरीके से इस प्रकार लागू करना होगा की एक कार्यक्रम का अनुशरण दूसरे कार्यक्रम से स्वतः ही जुड़ता चला जाये। तथा रचनात्मक कार्यक्रमों में वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप उसकी प्रकृति एवं स्वरूप में जो परिवर्तन होगा वो निम्न प्रकार से किया जाएगा –

- शिक्षा संबंधी कार्यक्रम जिनमें बुनियादी तालीम, बड़ों की तालीम को वैज्ञानिकता के तौर पर सामाजिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए, प्रत्येक क्षेत्र में ज्ञान को बढ़ावा देना होगा। अर्थात व्यावसायिक तालीम के अलावा विज्ञान, गणित, समाजविज्ञान एवं साहित्यिक ज्ञान को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया जाये। इसके अलावा आरोग्य के नियमों की शिक्षा को भी पाठ्यक्रम में

अथवा एक अलग ही विषय के रूप में स्थान देना चाहिए। जब छात्र इन सभी ज्ञान-मार्गों से परिचित होगा तो समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को भली-भांति रूप से समझ पाएगा और अपने विचारों एवं ज्ञान का प्रयोग सामाजिक हित के लिए करेगा।

- अस्पृश्यता निवारण कार्यक्रम को सामज में व्यावहारिक तौर पर स्थान देने हेतु व्यक्तिगत सोच को प्रभावित करना होगा। हमारे देश में इस सामाजिक बुराई को समाप्त करने हेतु संवैधानिक कानून तो है परंतु समाज में इसके प्रति सभी को जागरूक करते हुए उनको पूर्वाग्रहों से मुक्त करना होगा, अतः इससे संबन्धित कार्यक्रमों को अधिक से अधिक बढ़ावा देना होगा। आदिवासियों के विकास को ध्यान में रखते हुए सरकारी योजनाओं के दूर-दराज क्षेत्रों में क्रियान्वयन हेतु सरकार को पुख्ता कदम उठाने होंगे। एवं परिरिवारिक स्तर पर जब स्त्री की दशा में सुधार होगा तो स्वतः ही समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और स्त्री-पुरुष समननता को बल मिलेगा।
- कौमी एकता वस्तुतः सभी धर्मों, संप्रदायों एवं वर्गों के मेल की बात करती है। अतः धार्मिक पक्ष जब तक मजबूत रहेगा यह संभव नहीं , अतः धार्मिक कट्टरता को समाप्त करने का प्रयास किया जाये। जब सभी व्यक्ति धार्मिक उदारता दिखाएंगे तभी समाज में सांप्रदायिक एकता संभव है। तथा नशाबंदी को लागू करने हेतु सरकार पर ज़ोर डाला जाये ताकि नशीले पदार्थों के उत्पादन पर रोक लगाई जा सके। खादी एवं अन्य ग्रामुद्योगों को बढ़ावा देने हेतु स्वदेशी के उपयोग पर बल देना चाहिए। आर्थिक समानता को स्थापित करने हेतु ट्रस्टिशिप का सिद्धान्त उपयुक्त है।
- भारत की भाषा संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु हिन्दी को सभी जगह प्रसारित करना चाहिए। इस हेतु सभी जगह पाठ्यक्रम में भाषा के तौर पर हिन्दी को स्थान देना उपयुक्त होगा, भले ही एक वैकल्पिक भाषा के तौर पर परंतु सभी इससे परिचित तो होंगे। तथा जब सभी हिन्दी से परिचित होंगे तो इसको राष्ट्र-भाषा के रूप में संभवतः स्वीकार भी कर पाएँ।
- कृषि को बढ़ावा देने हेतु सरकार को विभिन्न योजनाओं की सहायता से कृषक वर्ग को लाभान्वित करना चाहिए, इस हेतु नवीन कृषि-यंत्रों के आविष्कार से लेकर नये प्रकार के बीजों एवं दवाओं को

उपलब्ध करना चाहिए जिससे उत्पादन अधिक एवं आसान हो सके। मजदूरी को एक ही मापदंड के आधार पर निर्धारित कर देना चाहिए जिससे मजदूर अपना घर-परिवार अच्छे से चला सकें।

उपायुक्त कार्यप्रणालियों के द्वारा हम गांधी जी के रचनात्मक प्रयोगों का वर्तमान समय में उपयोग कर सामाजिक शांति एवं विकास के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। आश्रम रूपी शांति प्रयोगशाला को पुनर्जीवित करने हेतु उसमें बदलाव तो आवश्यक है परंतु उसके उद्देश्य में तनिक भी परिवर्तन नहीं होना चाहिए। गांधी जी ने कहा भी था की कोई भी नियम, सिद्धान्त या व्यवस्था तटस्थ रह कर अपना अस्तित्व खो देती है अतः अगर उसको बने रहना है तो समयानुसार उसमें परिवर्तन आवश्यक है। *"स्व. नारायण भाई देसाई ने सही कहा है कि गांधी जी ने अपने आश्रमों के जरिये पीतल से सोना, मिट्टी से मर्द बनाने का कार्य किया है।"*[1] गांधी जी बहुत ही व्यावहारिक व्यक्ति थे, उन्होने अपने विचारों एवं सामाजिक चिंतन को केवल सैद्धान्तिक रूप में नहीं रखा बल्कि प्रायोगिक तौर पर समाज पर उसको लागू करने का प्रयास किया। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार एक वैज्ञानिक अपनी कल्पना को प्रयोगों के आधार पर साकार रूप प्रदान करता है। गांधी जी के प्रयोग सर्वव्यापी एवं सार्वकालिक थे अतः इनको वृहद स्तर पर प्रसारित करना ही इनके प्रयोग का सही तरीका होगा। गांधी जी ने **मेरे सपनों का भारत** पुस्तक में भारत के जिस तस्वीर को प्रस्तुत किया है उसके निर्माण में गांधी के प्रयोगों की अहम भूमिका होगी। वस्तुतः उनके द्वारा बताए गये मार्ग एवं विश्वास के साथ आगे बढ़ा जाए, रचनात्मक कार्यक्रमों का जो स्वरूप गांधी जी के समय था उनके अध्ययन एवं विश्लेषण के पश्चात वर्तमान व्यवस्था एवं वातावरण के अनुरूप ढाला जाए, तथा सामाजिक जीवन पर एवं समाज के द्वारा एक अंग के रूप में उनको स्वीकार किया जाए, तभी इसका प्रभाव स्वतः ही परिलिक्षित होने लगेगा।

[1] भगवान सिंह,गांधी के आश्रम संदेश हैं.2015.पृ.180.